विकृति विज्ञान – 1

वातिक हृद्रोग का निदान सम्प्राप्ति परक अध्ययन

अध्येता	:	डा. अशोक कुमार अवस्थी
निर्देशक	:	डा. राधाकान्त शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. कुणाल कोठारी
वर्ष	:	1991

आधुनिक समाज में हृद्रक्ताल्पता जन्य हृद्रोग तीव्रता से फैलता जा रहा है एवं इसकी मारक दर भी अत्यधिक है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में विगत कुछ वर्षों में नवीनतम आविष्कृत यन्त्रादि की सहायता से इस व्याधि पर अत्यधिक अनुसंधानात्मक कार्य हुआ है, तथापि हृद्रक्ताल्पता जन्य हृद्रोग की तीव्रता तथा मारक दर में अपेक्षित कमी नही आई है। इसी को दृष्टिगत रखकर वातिक हृद्रोग के विकृति विज्ञानीय पक्ष के अनुसंधान हेतु इस विषय का चयन किया गया है।

इस अध्ययन हेतु 20 आतुरों के चार वर्ग बनाए गए तथा प्रत्येक वर्ग में 5 आतुरों को लिया गया।

वर्ग अ - हरीतक्यादि वटी (भै.र. 33/4) 500 मि.ग्रा. की 2 वटियां दिन में तीन बार जल से दी गई ।

वर्ग ब - लशुनादि गुग्गुलु (कल्पित, घटक – लशुन, पुष्करमूल एवं गुग्गुलु समभाग) 500 मि.ग्रा. की 2 वटियां दिन में तीन बार जल से दी गई।

वर्ग स - हरीतक्यादि वटी + लशुनादि गुग्गुलु की 500–500 मि.ग्रा. की 2–2 वटियां दिन में तीन बार जल से दी गई ।

वर्ग द - Placebo - Glucose powder 250 मि.ग्रा. दिन में दो बार दिया गया।

औषध प्रयोग अवधि 1½ माह रखी गई ।

वर्ग अ में 20 उपशयात्मक लक्षणों में से 15 लक्षणों में 60 प्रतिशत से अधिक लाभ (उत्तम लाभ), 5 लक्षणों में 40–60 प्रतिशत लाभ (मध्यम लाभ) प्राप्त हुआ ।

वर्ग ब में समस्त प्राप्त लक्षणों में 60–100 प्रतिशत लाभ (उत्तम लाभ) प्राप्त हुआ ।

वर्ग स में समस्त प्राप्त लक्षणों में 60–100 प्रतिशत लाभ (उत्तम लाभ) प्राप्त हुआ ।

वर्ग द में 40 प्रतिशत से कम लाभ (अल्प लाभ) रहा।

विकृति विज्ञान – 2

आकृति परीक्षा का रोग नैदानिक अध्ययन

अध्येता	:	डा. गिरिधर शर्मा
निर्देशक	:	डा. राधाकान्त शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. श्रीकृष्ण खाण्डल
वर्ष	:	1991

अष्टविध परीक्षाओं में आकृतितः परीक्षा का उल्लेख किया गया है इस दृष्टिकोण से आतुरों में व्याधि अवस्था में आकृतितः परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है इसी उद्देश्य को लेकर तथा अरिष्टावस्था में भी आकृति में परिवर्तन का अध्ययन करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

अध्येता द्वारा 20 आतुर अध्ययनार्थ लिए गए तथा आतुरों के मुखगत परिवर्तन को विशेषतया आधार बनाया गया।

मुख की आकृति को दृष्टिगत रखते हुए रोग निर्धारण में अन्य उपायों के साथ–साथ नैदानिक सौकर्यता आ जाती है। कतिपय मानसिक रोगियों के मुख पर भयानकता व कुटिलता तथा दैन्य दृष्टिगोचर होता है जो कि उनकी मानसिक विकृति निर्धारण में सहायक होता है। वृक्कशोथ के रोगी की मुखगत आकृति में वर्णगत परिवर्तन होकर वह श्वेत हो जाती है। मुखमण्डल में पीताभता कामला का संकेतक है। भ्रू, नेत्र, कर्ण, जिह्वा, मुख आदि टेढे होने पर अर्दित रोग का निदान होता है।

विकृति विज्ञान – 3

कतिपय रोगों का नाड़ी परीक्षणात्मक रोग नैदानिक अध्ययन

अध्येता	:	डा. सतपाल
निर्देशक	:	डा. राधाकान्त शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. पीयूष मेहता
वर्ष	:	1992

अष्टविध परीक्षा में नाडी परीक्षा प्रथम स्थान पर है। शास्त्रोक्त नाड़ी परीक्षण द्वारा व्याधि निदान प्रक्रिया का अध्ययन करना महानिबन्ध का उद्देश्य है।

शास्त्र में व्याधि अनुसार नाड़ी परिवर्तन के लक्षणों का वर्णन किया गया है, अध्येता ने नाड़ी परीक्षा के साथ–साथ इतर रोग निदान साधनों द्वारा तुलनात्मक दृष्टि से भी व्याधि निर्धारण कर नाडी परीक्षा को समझाने का प्रयास किया है।

अध्येता द्वारा 30 सामान्य स्वस्थ व्यक्ति तथा 30 आतुर व्यक्तियों का चयन किया गया। आतुरों में विषमज्वर एवं तमक श्वास के रोगियों का चयन किया गया।

विषमज्वर के 21 आतुरों में से 11 आतुरों की वय 2 से 24 वर्ष की थी, उनमें से 5 आतुरों में वातपैत्तिक नाड़ी तथा 2 आतुरों की शुद्ध पैत्तिक नाड़ी प्राप्त हुई। 55 से 68 वर्ष की वय के प्राप्त 10 आतुरों में से 6 तमक श्वास के तथा 4 ज्वर के आतुर पाए गए। 4 में से 3 ज्वर आतुरों में वातपैत्तिक नाड़ी तथा तमकश्वास के 6 में से 3 आतुरों में वातकफज नाड़ी पाई गई।

30 स्वस्थ व्यक्तियों में जो कि किशोर एवं युवा आयु वर्ग के थे, इनमें शुद्ध वातिक नाड़ी किसी में प्राप्त नहीं हुई, शुद्ध पैत्तिक नाड़ी के 2 तथा कफज का एक व्यक्ति था, द्वन्दज नाड़ी में वातपैत्तिक नाड़ी के 15, वातश्लैष्मिक के 5 व पित्तश्लैष्मिक नाड़ी के 7 स्वस्थ व्यक्ति पाए गए।

नाड़ी परीक्षा द्वारा व्याधि अनुसार दोष प्राबल्य दृष्टिगोचर होता है तथा नाड़ी परीक्षा के साथ–साथ निदान लक्षण द्वारा एवं अन्य परीक्षाओं की भी व्याधि निदान में महत्ता है।

विकृति विज्ञान – 4

हृदयोपघातज शोथ का नैदानिक एवं वनपलाण्डु कन्द चूर्ण का उपशय प्रभावात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. शिव प्रसाद पारीक
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
वर्ष	:	1992

चिकित्सा के लिए रोग विनिश्चय आवश्यक होता है और रोग विनिश्चय हेतु निदान पंचक का ज्ञान आवश्यक है। उपशय का महत्व उस स्थिति में होता है, जब व्याधि ज्ञान शेष चार रोग निदान माध्यमों द्वारा नहीं हो पाता है। इसी दृष्टि कोण से हृदयोपघातज शोथ का नैदानिक अध्ययन तथा वनपलाण्डु का उपशय के रूप में अध्ययन करने हेतु इस महानिबन्ध के विषय का चयन किया गया है।

प्रायोगिक अध्ययन हेतु कुल 25 रोगियों का चयन किया गया और उन्हें औषध के रूप में वनपलाण्डु कन्द चूर्ण 100 मि.ग्रा. मात्रा में दिन में तीन बार जल अनुपान से 21 दिनों तक दिया गया । शोथ आधिक्य में पुनर्नवाष्टक क्वाथ (शार्ङ्ग.धरसंहिता म. खण्ड 2/78–79) भी 30–40 मि.लि. मात्रा में प्रयोग कराया गया ।

परिणाम के रूप में कण्ठशिरा उभारयुक्त में 84 प्रतिशत, पादशोथ में 100 प्रतिशत, सर्वांगशोथ में 81.82 प्रतिशत, यकृतवृद्धि में 76 प्रतिशत, जलोदर में 80 प्रतिशत, गौरव में 84 प्रतिशत, अंगसाद में 93.34 प्रतिशत, क्षुधानाश में 89.50 प्रतिशत, निद्रानाश में 81.82 प्रतिशत, श्वासकृच्छ्रता में 88 प्रतिशत, लेटने पर अत्यधिक श्वासकृच्छ्रता में 80 प्रतिशत, कास में 73 प्रतिशत, ष्ठीवन में 77.78 प्रतिशत, तीव्रहृदयगति में 92 प्रतिशत, फुफ्फुसों की आर्द्र ध्वनि में 84 प्रतिशत, हृद्द्रव में 80 प्रतिशत, उरःशूल एवं उदरशूल में 100 प्रतिशत, हृल्लास में 28.58 प्रतिशत तथा हृदय विस्फारण में 40 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ।

इस प्रकार उक्त औषध के हृदयजन्य शोथ में यथा – पादशोथ तथा सर्वांगशोथ में अत्युत्तम परिणाम उपलब्ध हुए हैं।

विकृति विज्ञान – 5

उच्च रक्तभार का आयुर्वेदीय निदान सम्प्राप्ति परक अध्ययन

अध्येता	:	डा. मुत्तिनेनि रामाराव
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. कुणाल कोठारी
वर्ष	:	1992

मृत्यु कारणों में हृदय परिसंचरण तंत्र की व्याधियाँ प्रमुख हैं, जिनमें उच्च रक्तभार के रोगी 16–25 प्रतिशत मिलते हैं। यह व्याधि मस्तिष्क, वृक्क, अक्षि आदि मर्मावयवों को आघात पहुंचाती है। परन्तु आज पर्यन्त इसकी निदान सम्प्राप्ति स्पष्ट नहीं हो पाई। इसके निदान, सम्प्राप्ति को स्पष्ट करने तथा उपशयात्मक अध्ययन के उद्देश्य से महानिबन्ध के विषय का चयन किया गया है ।

प्रायोगिक अध्ययन हेतु 50 रोगियों का चयन किया गया परन्तु उपशयात्मक अध्ययन की सभी अवस्था मात्र 15 आतुरों में ही सम्पन्न हो सकी।

औषध योग – प्रसादिनी वटी (घटक–शंखपुष्पी 3 भाग+सर्पगन्धा 1 भाग)

अनुसंधानार्थ चयनित आतुरों को एक माह तक औषाधाभास (Placebo) दिया गया। तत्पश्चात् एक सप्ताह अनन्तर रोगियों को एक माह तक प्रसादिनी वटी दी गई।

प्रत्येक आतुर को 2–2 प्रसादिनी वटी (1 वटी = 500 मि.ग्रा.) प्रातः, मध्यान्ह एवं सायं जल अनुपान से दी गई। औषधाभास में आतुरों को ''बी'' काम्प्लेक्स वटी 1–1 प्रातः, मध्यान्ह एवं सायं दी गई। औषध सेवनकाल की अवधि 1 माह रखी गई।

औषध सेवन के पश्चात् उच्च रक्तचाप के रोगियों के लक्षणों में निम्नानुसार लाभ देखा गया – रक्त भार वृद्धि में 86.67%, हृद्द्रव में 71.42%, क्रोध ह्रास में 50%, शिरःशूल में 78.57%, अनिद्रा में 100%, शिरोग्रह में 60%, भ्रम में 85.71%, स्मृतिनाश में 100%, अंगमर्द में 69.23%, क्लम में 50%, कर्णनाद एवं मन संक्षोभ में 100–100%, बल ह्रास तथा हृद् प्रदेश शूल में 50–50% ।

विकृति विज्ञान – 6

हृच्छूल का निदान सम्प्राप्ति परक अध्ययन

अध्येता	:	डा. श्रीकृष्ण नारायण
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
वर्ष	:	1992

आज सम्पूर्ण विश्व में जिन व्याधियों से अधिक मृत्यु हो रही है, उनमें हृद्रोग प्रमुख है। हृद्रोगों में भी हृत्पेशीगत विशेषताजन्य व्याधियों से सर्वाधिक मृत्यु हो रही है। इस व्याधि के निदान सम्प्राप्ति परक विवेचनार्थ एवं चिकित्सा सौकर्यार्थ शोध विषय का चयन किया गया है।

हृच्छूल के 50 आतुरों का निदान सम्प्राप्ति परक अध्ययन किया गया परन्तु उपशयात्मक अध्ययन की सभी अवस्थाएं मात्र 15 आतुरों में सम्पन्न हो सकी।

औषध के रूप में पार्थ्यादि वटी (कल्पित योग) का प्रयोग किया गया, जिसके घटक हैं –

अर्जुन त्वक् चूर्ण – 2 भाग

पुष्करमूल चूर्ण– 1 भाग एवं

गुग्गुलु (त्रिफलाशोधित) – 2 भाग – इन तीनों को मिलाकर गोंद की सहायता से 750 मि.ग्रा. की वटी का निर्माण किया गया।

औषध मात्रा – 4 – 4 वटी दिन में 3 बार

अनुपान – जल

औषध सेवन अवधि – 2 ½ से 3 माह तक रखी गई।

परिणामतः पुरोहार्दिक रूजा में 73 प्रतिशत, श्रमश्चात्यर्थ वेदना में 73 प्रतिशत, चिन्तने चात्यर्थ वेदना में 100 प्रतिशत, जीर्णेश्चात्यर्थ वेदना में 83 प्रतिशत, रूजाप्रसर में 75 प्रतिशत, श्वासावरोध में 100 प्रतिशत, अकस्मात् दीनता में 100 प्रतिशत, अल्पनिद्रा में 80 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ।

विकृति विज्ञान – 7

वृक्क जन्य शोथ का निदान सम्प्राप्ति परक अध्ययन

अध्येता	:	डा. कृष्णा माहेश्वरी
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. श्रीकृष्ण खाण्डल
वर्ष	:	1993

आयुर्वेद संहिताओं में वृक्करोग का स्वतन्त्र वर्णन उपलब्ध नही है। अपितु मूत्र सम्बन्धी विकारों में यत्र–तत्र इसका संक्षेप में वर्णन मिलता है। भैषज्य रत्नावली में वृक्करोग चिकित्सा नामक स्वतन्त्र अध्याय वर्णित है। वृक्क सम्बन्धी विकारों में वृक्क जन्य शोथ भी एक ऐसा विकार है जो मानव के लिए अनिष्टकारी प्रभाव सद्यः प्रकट करता है। अतः वृक्कशोथ का निदान सम्प्राप्ति परक अध्ययन महानिबन्ध का विषय चयनित किया गया है।

20 रोगी अध्ययनार्थ चयनित करके दो वर्ग बनाए गए। प्रथम वर्ग में गोक्षुरादि गुग्गुलु (शार्ङ्ग.धरसंहिता म. खण्ड 7/84–87) 500 मि.ग्रा. दिन में तीन बार एवं पुनर्नवाष्टक क्वाथ (भैषज्यरत्नावली 43/8) 20 मि.लि. दिन में दो बार तथा द्वितीय वर्ग में गोक्षुरादि गुग्गुलु, पुनर्नवाष्टक क्वाथ एवं चन्द्रप्रभा वटी (भैषज्यरत्नावली 37/87) 500 मि.ग्रा. दिन में तीन बार दी गई।

औषध प्रयोग अवधि 60 दिन रखी गई।

प्रथम वर्ग के आतुरों में कुल 123 लक्षण मिले, जिनका शमन 67.48 प्रतिशत तथा द्वितीय वर्ग के आतुरों में 129 लक्षण मिले, जिनका शमन 75.11 प्रतिशत हुआ।

विकृति विज्ञान – 8

प्रमेहजनित मूत्रविकारों का सम्प्राप्ति परक अध्ययन

अध्येता	:	डा. आनन्द कुमार शर्मा
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
वर्ष	:	1994

आयुर्वेद वाङ्मय में वर्णित प्रमेह एक ऐसा रोग है, जिसमें प्रत्यात्मलक्षण से लेकर भेदोपभेद तक के सभी लक्षण मूत्र के वैकारिक स्वरूप पर आधारित हैं। मूत्र का यह वैकारिक स्वरूप किन सम्प्राप्ति घटकों से बना है तथा इन सम्प्राप्ति घटकों का परस्पर क्या सम्बन्ध है? इस विषय का अध्ययन करना ही विषय चयन का आधार रहा है।

उपशयात्मक परीक्षण हेतु 20 आतुरों का चयन किया गया। औषध रूप में सुश्रुत में वर्णित सालसारादिगण भावित शिलाजीत का प्रयोग 500 मि.ग्रा. मात्रा में दिन में दो बार जल से किया गया । औषध सेवन काल एक माह रखा गया ।

प्रमेहरोग को मूत्रविकारों के आधार पर मूत्रवह स्रोतस् की व्याधि मानना उचित प्रतीत नही होता, क्योंकि कफ प्रधान त्रिदोष एवं मेदप्रधान दूष्यों की सर्वशरीरगत सम्मूर्च्छना के परिणामस्वरूप 20 प्रकार के मूत्रविकारों का लक्षित होना सर्वशरीरगत व्याधि का द्योतक है।

सर्वशरीगत व्याधि होने के कारण इसका अध्ययन केवल मूत्रपरीक्षण के आधार पर करना पर्याप्त नहीं है। अपितु दूष्य (मेद, रक्त आदि) परीक्षण के आधार पर अध्ययन युक्ति संगत है।

प्रमेहजनित मूत्रविकारों में सालसारादिगण भावित शिलाजीत का मूत्र एवं रक्तगत शर्करा पर एक माह का उपशयात्मक प्रभाव नगण्य पाया गया।

विकृति विज्ञान – 9

शोथ का सम्प्राप्ति परक एवं वनपलाण्डु कन्द चूर्ण का प्रयोगात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. श्रीनिवास त्रिपाठी
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
वर्ष	:	1994

त्रिमर्मों में हृदय की गणना प्रथमतः हुई है तथा यह स्पष्ट एक महत्वपूर्ण अवयव भी है। हृद्मर्मोपघात का आयुर्वेदीय साहित्य में विस्तृत वर्णन नहीं मिलता। इसकी विभिन्न अवस्थाओं तथा इससे उत्पन्न शोथ में वनपलाण्डु की कार्मुकता का अध्ययन कर मानवता को त्राण दिलाना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

प्रयोगात्मक अध्ययनार्थ 20 आतुरों का चयन किया गया ।

औषध रूप में वनपलाण्डु कन्द चूर्ण 175 मि.ग्रा. दिन में तीन बार जल से 4 सप्ताह तक दिया गया । अत्यधिक शोथ होने पर उक्त औषध के साथ पुनर्नवाष्टक क्वाथ (शार्ङ्ग.धरसंहिता म. खण्ड 2/78–79) 25–50 मि.लि. मात्रा में दिया गया ।

परिणामतः तीव्र हृदय गति, पाद शोथ, दिवाबली शोथ, श्वासकृच्छ्रता, गौरव, सर्वांगशोथ, निद्रानाश, कोष्ठबद्धता, लेटने पर श्वासकृच्छ्रताधिक्य, ष्ठीवन, वमन, फुफ्फसों में आर्द्रध्वनि, तृष्णा, उदरशूल, शुष्कध्वनि, शिरःशूल, गात्र स्फुरण, शीतत्व में 100 प्रतिशत लाभ हुआ। कण्ठशिरा उभार में 72 प्रतिशत, अंगसाद में 66.67 प्रतिशत, हृल्लास में 66.67 प्रतिशत, हृद्द्रव में 88.89 प्रतिशत, हृदयविस्फारण में 75 प्रतिशत, ज्वर में 66.67 प्रतिशत, बलक्षय में 75 प्रतिशत, उदर शूल में 75 प्रतिशत, क्लम में 66.67 प्रतिशत, सन्धिशूल व शोथ में 75–75 प्रतिशत, तन्द्रा में 85 प्रतिशत, अल्पनिद्रा 72.72 प्रतिशत, शीतकामिता में 67.67 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ।

Vikriti Vigyan – 10

Aetiopathological study of Switra (Vitiligo) and its management by some indigenous drugs

Scholar	:	Dr. Kanakamadale Satyaprabha
Guide	:	Dr. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Piyush Mehta
Year	:	1995

The object of this study is to evaluate the use of a Switrahar churna & Switrahar tail which is made up of Bakuchi, Haridra, Nimba, Khadir and Kakodumbar.

30 patients were selected for the study in three groups according to the age and extensiveness of the disease.

SW1 group –was treated with 6 gm of Switrahar churna of single dose internally with water and oil based drug externally for 3 months.

SW2 group was treated with 6 gm of Switrahar churna internally and powder soaked in water externally.

SW3 group was treated with oil based drug externally only.

Application of medicine showed excellent response with 5 patients (75 to 100%) in group SW1, 3 patients showed good response, 1 patient showed moderate response, 1 patient did not respond after continuous use of drug for three months.

In the same way excellent response was observed in 6 patients of SW2 group and 4 patients of SW3 group, good response was observed in 2 patients of SW2 group and 3 patients of SW3 group. One case in SW2 group and 2 cases in SW3 group did not respond to treatment after continuous use of drug for 3 months.

Altogether 15 out of 30 patients showed excellence response to treatment, 8 patients showed good response, 3 patients showed moderate response and 4 patients showed poor response from the treatment.

Vikriti Vigyan – 11

Yakrit-Dosha indigenous single drug management

Scholar	:	Dr. Pradeep Sethi
Guide	:	Dr. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Shyam Sunder Sharma
Year	:	1995

Yakrit-dosha is also agnidosha as it is a seat of Agni too. Agni is a root cause of vikrata & prakrita states of the body. Yakrit-dosha is functional disorder. Yakrit-dosha may be taken as failure of hepatocellular function that can complicate all forms of liver diseases.

The object of the study is to know the role of indigenous single drug in patients suffering from the specific type of Yakrit-dosha.

Thirty six patients were selected for the study and divided into four groups of 10, 10, 10 & 6. Three groups were given the drug & 4^{th} group of the six patients given placebo.

Ist group - Ghansatva of Aloevera 500 mg cap. once daily for 21 days.

IInd group - Rubia cordifolia was used in the form of ark 50 ml twice a day for 21 days.

IIIrd group - Tephrosia purpurea ksar 250mg cap. twice a day for 21 days.

IVth group - Placebo was given 500mg cap. once daily for 21 days.

Symptoms belonging to Yakrit-dosha like yellow discolouraction of urine, yellow discolouration of eyes, loss of appetite, nausea, fever, pruritis, vomiting, constipation - these symptoms are reduced significantly. First three groups where medicines were given all patients become disease free earliar as compared to placebo.

Vikriti Vigyan – 12

Aetiopathological study on Amavata, Diagnostic, Therapeutic effect of Bhallatak Kshirpak

Scholar	:	Dr. P.K. Mohanty
Guide	:	Dr. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Piyush Mehta
Year	:	1995

The objectives of this study were –

-To prove that Amavata is not a disease but a syndrome which can be correlated with Rheumatism .

-Cause of Rheumatism is not clearly known to scientist due to similar properties of Amavata with Rheumatism aetiology can be stressed out.

-To avoid the cause of Amavata after exploring the aetiological factors.

-To evaluate the therapeutic effect of Bhallataka Kshirpaka (Cha.Chi. 1-2/13) on Amavata.

Total 30 patients were selected for study in 2 groups.

group I -125 ml Bhallatak Kshirpak b.d. with 100 ml milk anupan for 28 days duration.

Group II – Ibugesic 400 mg. t.d.s. after food for 21-28 days duration.

After the trial it was found that in group I –

4 patients – complete remission

4 patients - moderate improvement

5 patients - minor improvement

2 patients –poor improvement.

In group IInd the findings were –

4 patients - moderately relieved

7 patients - minor improvement

4 patients - less response.

विकृति विज्ञान – 13

तमक श्वास का नैदानिक एवं जन्तु परीक्षणात्मक अध्ययन

(हरिद्रादि चूर्ण एवं धूमपान के प्रायोगिक सन्दर्भ में)

अध्येता	:	डा. रामनारायण सिंह ध्रुवे
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. प्रेम लोरिया
वर्ष	:	1996

वर्तमान युग में बढ़ते औद्योगिक व्यवसाय, वाहनों से निर्गत प्रदूषित धुआं, रासायनिक धुआं जो कि फैक्ट्रियों से निर्गत होता है एवं समुचित आवास व्यवस्था का अभाव जो कि बढ़ती जनसंख्या का दुष्परिणाम है। उपरोक्त हेतुओं से तमक श्वास रोग की तीव्रता में वर्तमान में अत्यधिक वृद्धि हुई है, अतः इस रोग की तीव्रता को दृष्टिगत रखते हुए ही इस महानिबन्ध के विषय का चयन किया गया है।

वर्ग 'अ'' में 18 तमक श्वास के आतुरों का चयनकर हरिद्रादि चूर्ण (चक्रदत्त 12/16) 1 ग्राम की मात्रा में दिन में 3 बार सम भाग गुड व सरसों के तैल के साथ 3 सप्ताह तक प्रयोग कराया गया। वर्ग 'ब'' में 10 तमक श्वास के आतुरों को वेग के समय धूमपान कराया गया (धूमपान हेतु च.चि. 17/78 के धूमपान के घटकों के चूर्ण में कुछ मात्रा में घृत मिलाकर बाजार में मिलने वाली निर्दोष सिगरेट के चूर्ण को बाहर निकालकर उसमें धूमपान के चूर्ण को भरकर प्रयुक्त किया गया) ।

वर्ग 'अ'' के तमक श्वास के आतुरों में श्वास वेग की तीव्रता व अवधि में महत्वपूर्ण रूप से कमी आई, परिणाम 45.38 प्रतिशत रहा।

वर्ग 'ब'' के आतुरों में धूमपान के पश्चात् यद्यपि तात्कालिक रूप से श्वास वेग की तीव्रता में ह्रास हुआ परन्तु श्वास वेग की अवधि में महत्वपूर्ण रूप से ह्रासात्मक परिवर्तन नहीं हुआ, PEFR में आंशिक वृद्धि हुई ।

जन्तु परीक्षणात्मक अध्ययन के अन्तर्गत गिनी पिग जन्तुओं को धूमपान योग के प्रत्येक घटक द्रव्य के सूक्ष्म चूर्ण का डिस्टिल वाटर से घोल बनाकर मुख द्वारा प्रयोग कराया गया, जिसमें औषध का श्वसनिका संकोच विरोधी गुण प्रदर्शित हुआ। यह 'टी' टेस्ट द्वारा सार्थकता भी प्रदर्शित करता है।

विकृति विज्ञान – 14

अजीर्ण, अम्लपित्त एवं शूल का अनुबन्ध्यानुबन्ध्यत्व विवेचन पूर्वक कामदुधा रस का उपशयात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. सुरेश कुमार सैनी
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. श्रीकृष्ण खाण्डल
वर्ष	:	1997

अजीर्ण अनेक व्याधियों में लक्षण रूप में पाया जाता है, यह निदानार्थकर रूप से अन्य व्याधियों का जनक भी है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर अजीर्ण, अम्लपित्त एवं शूल का अनुबन्ध्यानुबन्ध्यत्व रूप से अध्ययन करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

अध्ययन हेतु कुल 30 आतुर चयनित किए गए तथा उनके 3 वर्ग बनाए गए। 10 अजीर्ण के आतुरों को कामदुधा रस (रसयोगसागर, अम्लपित्त रोगाधिकार/711–713) 500 मि.ग्रा. जीरक चूर्ण के साथ दिन में 2 बार दिया गया। 10 अम्लपित्त आतुरों को कामदुधा रस 500 मि.ग्रा. मिश्री चूर्ण के साथ दिन में 2 बार तथा 10 शूल के आतुरों को कामदुधा रस 500 मि.ग्रा. मधुयष्टि के साथ दिन में 2 बार दिया गया । औषध प्रयोग अवधि एक माह रखी गई।

कामदुधा रस का अजीर्ण में उपशय सर्वाधिक 59.57 प्रतिशत तथा अम्लपित्त में 58.24 प्रतिशत लाभ रहा, जबकि शूल रोग में लक्षणोपशमन 53 प्रतिशत रहा।

विकृति विज्ञान – 15

पाण्डुरोग का सारतः परीक्षा के परिप्रेक्ष्य में निदान सम्प्राप्ति परक एवं नवायस लौह का उपशयात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. सुमन यादव
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. पीयूष मेहता
वर्ष	:	1997

सार परीक्षा का उल्लेख आचार्य चरक ने दशविध परीक्षा प्रकरण में किया है। आचार्य चरक ने पाण्डु रोग प्रकरण में पाण्डु की सम्प्राप्ति के अन्तर्गत पाण्डु रोग में निःसार शब्द का उल्लेख किया है, इससे स्पष्ट होता है कि पाण्डु रोग में तीव्रता के आधार पर रस व रक्तसार हीनता दृष्टिगोचर होती है। उस सार हीनता का निर्धारण पाण्डुरोग में लक्षणों के आधार पर करना ही अध्येता का उद्देश्य रहा है।

अध्ययन हेतु 30 रोगियों का चयन किया गया । औषध रूप में नवायस लौह (च.चि. 16/70–71) 500 मि.ग्रा. मात्रा में दिन में 2 बार मधु के साथ दिया गया। औषध प्रयोग काल 4 सप्ताह रखा गया । परीक्षण के रूप में आतुर में हीमोग्लोबिन जांच तीन बार कराई गई – औषध देने से पूर्व, 15 दिन पश्चात् तथा एक माह पश्चात्।

नवायस लौह के प्रयोग से पाण्डुरोगाक्रान्त आतुरों के विभिन्न लक्षणों यथा – मंदाग्नि, दुर्बलता, कर्णक्ष्वेड, अन्नद्वेष, कटिउरुपादरुक, आरोहणायास में शत प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ तथा गात्र शूल में 80%, श्रम व भ्रम में 75%–75%, निद्रालुता में 70%, त्वक्पाण्डुता व निःसारता में 65%–65%, पिण्डिकोद्वेष्टन व प्रभानाश में 55%–55% लाभ प्राप्त हुआ । परिणामतः यह औषध रक्तशोधक,रक्तवर्धक, दीपन, आमपाचक, अग्निवर्धक होने से पाण्डु में उत्पन्न सारहीनता को दूर करने में समर्थ है।

विकृति विज्ञान – 16

रक्तगतवात (उच्चरक्तचाप) का निदान सम्प्राप्ति परक व प्रसादिनी वटी का उपशयात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. विष्णुदत्त शर्मा
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. पीयूष मेहता
वर्ष	:	1997

रक्तगतवात (उच्च रक्तचाप) का शास्त्रोक्त दोष, दूष्य एवं स्रोतोदुष्टि आदि लक्षणों के आधार पर रोगी में निदान सेवन से रोगोत्पत्ति में भाग लेने वाले घटकों का विश्लेषण कर सम्प्राप्ति प्रक्रिया को सुस्पष्ट करने का प्रयास करना ही महानिबन्ध का उद्देश्य है।

इस उपशयात्मक अध्ययन हेतु 20 आतुरों (24–65 वर्ष आयु वर्ग के) का चयन किया गया । औषध के रूप में प्रसादिनी वटी (कल्पित योग, घटक द्रव्य – शंखपुष्पी + सर्पगन्धा – 3:1 मात्रा में) 3 ग्राम मात्रा में दिन में तीन बार जल अनुपान से चार सप्ताह तक दी गई।

प्रथम सप्ताह के बाद प्रत्येक रोगी के संकोचकालिक रक्तदाब में कमी हुई जो कि 5–10 एम.एम. एच.जी. तक रही । दूसरे सप्ताह के बाद रूग्णों के संकोचकालिक व प्रसारकालिक रक्तदाब में 10–20 एम.एम. एच.जी. कमी आई, साथ ही लक्षणोपशान्ति में लाभ पाया गया।

तीसरे सप्ताह के बाद रूग्णों के संकोचकालिक व प्रसारकालिक रक्तदाब दोनों ही सामान्य अवस्था में पाए गए तथा लक्षणोपशमन भी पूर्णरूपेण पाया गया। चतुर्थ सप्ताह के पश्चात् रक्तदाब व लक्षण दोनों ही सामान्य अवस्था में पाए गए।

विकृति विज्ञान – 17

अम्लपित्त का निदान सम्प्राप्ति परक एवं उपशयात्मक अध्ययन

(अविपत्तिकर चूर्ण एवं कपर्द भस्म के परिप्रेक्ष्य में)

अध्येता	:	डा. रोहित कुमार रावते
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. श्रीकृष्ण खाण्डल
वर्ष	:	1997

मन्दाग्नि प्रायः सभी रोगों कि उत्पत्ति का मूल कारण है, अग्निमांद्य से अजीर्ण, ग्रहणी, अम्लपित्त आदि रोगों की उत्पत्ति होती है। मिथ्या आहार–विहार और मानसिक कारण अम्लपित्त रोग को उत्पन्न करते हैं। अम्लपित्त रोग की प्रारम्भिक अवस्था में चिकित्सा नही की जाए तो आगे यह आमाशय व्रण तथा ग्रहणी व्रण को उत्पन्न कर देता है।

इस महानिबन्ध के उद्देश्य हैं :

1. अम्लपित्त के सामान्य विशेष हेतु परिज्ञान।
2. अम्लपित्त रोग के क्रमिक विकास एवं निदान परिवर्जन, सम्प्राप्ति संघटन एवं विघटनात्मक प्रक्रिया का ज्ञान ।
3. अम्लपित्त रोग में अविपत्तिकर चूर्ण एवं कपर्द भस्म का उपशयात्मक अध्ययन।

इस अध्ययन हेतु 20 आतुरों का चयन कर अ व ब दो वर्ग बनाए गए ।

औषध के रूप में वर्ग अ के 10 आतुरों को अविपत्तिकर चूर्ण (भैषज्यरत्नावली 56/25–29) 3 ग्राम मात्रा में प्रातः, सायं जल अनुपान से 21 दिन तक दिया गया तथा वर्ग ब के 10 आतुरों को कपर्द भस्म (रसतरंगिणी 12/93) 250 मि.ग्रा. की मात्रा में दिन में दो बार जल अनुपान से 21 दिन तक दी गई ।

वर्ग अ के आतुरों में उत्तम लाभ 70 प्रतिशत तथा मध्यम लाभ 30 प्रतिशत आतुरों में प्राप्त हुआ।

वर्ग ब के आतुरों में उत्तम लाभ 50 प्रतिशत, मध्यम लाभ 40 प्रतिशत तथा अलाभ 10 प्रतिशत आतुरों में प्राप्त हुआ।

विकृति विज्ञान – 18

आंत्रिक ज्वर का निदान सम्प्राप्ति परक एवं उपशयात्मक अध्ययन (संजीवनी वटी व लक्ष्मीनारायण रस के परिप्रेक्ष्य में)

अध्येता	:	डा. राजेन्द्र कुमार शर्मा
निर्देशक	:	डा. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. पीयूष मेहता
वर्ष	:	1997

ज्वर के अनेक भेदों में आन्त्रिक ज्वर का प्रमुख स्थान है। दूषित आहार एवं दूषित पेय पदार्थों के सेवन से इस व्याधि की तीव्रता में वृद्धि होने को दृष्टि में रखते हुए शोध हेतु इस विषय का चयन किया गया है।

इस अध्ययन हेतु 20 आतुरों का आयुर्वेदिक एवं आधुनिक परीक्षणोपरान्त चयन कर उपशय के रूप में संजीवनी वटी (शार्ङ्ग.धरसंहिता म.खण्ड 7/18–21) 125 मि. ग्रा. की मात्रा में दिन में तीन बार तथा लक्ष्मीनारायण रस (योगरत्नाकर, वातव्याधि चिकित्सा) 125 मि.ग्रा. की मात्रा में दिन में तीन बार एक तुलसीपत्र एवं आधा लवंग डाले हुए उष्ण जल के अनुपान से दिया गया। औषध प्रयोग 21 दिनों तक किया गया।

परिणाम के रूप में यह पाया गया कि संजीवनी वटी एवं लक्ष्मीनारायण रस का संयुक्त प्रयोग आन्त्रिक ज्वर में आशुप्रभावकारी नहीं है। सात दिनों के पश्चात् लक्षणों की तीव्रता में न्यूनता परिलक्षित होती है एवं 14 से 21 दिनों की अवधि में औषध का प्रभाव उत्तम है। 21 दिनों तक दोनों औषधियों का प्रयोग करने पर अधिकांश लक्षणों का शमन हो जाता है एवं लगभग 83.78 प्रतिशत आतुरों में लक्षणों की निवृत्ति देखी गई।

Vikriti Vigyan – 19

A Clinical study of Madhumeha and management by Ahar, Vihar & Aushadh as Methica and Guargum

Scholar	:	Dr. Ghongade S.V.
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Piyush Mehta &
		Dr. S.K. Khandel
Year	:	1998

The objects of this study were :

1. To find out relationship between Madhumeha & dietary habits along with life style.
2. To study the clinical effects of Methica (Trigonella foenum graecum) & Guargum (Cyamopsis tetragonoloba) on Madhumeha.

20 patients were selected for trial.

Methica & Guargum powder in a dose of 3-5 gm was given twice daily with luke warm water before meal for 8 weeks. Patients were regularly followed up every 15 days.

After the trial it was found that the improvement in PPB sugar level is more significant than in FB sugar level. In fasting urine sugar level & post prandial urine sugar level, the improvement were 23% and 17.3% respectively. Thus the medicine has significant hypoglycaemic action.

Vikriti Vigyan – 20

Clinical study of Amavata and management by Ahar & Aushadh as Kutaja

Scholar	:	Dr. Amarendra Kumar Singh
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. S.K. Khandel
Year	:	1998

The object of this study was management of Amavata with emphasis on the triad of "Aushadh, Ahar and Vihar". The result of clinical study have also been scrutinized from both ayurvedic as well as modern medical point of view to arrive at important conclusion.

20 patients presenting the sign of Amavata as well as Rheumatoid Arthritis were selected for this study. The administration of drug has been started in the form of kwatha along with correction of Ahara & Vihara. For the preparation of kwatha the drug Kutaja bark (Holarrhena antidysenterica) in coarse powder form (yavkoot churna) has been boiled with water, in the ratio of 1:8 when the water remains $1/4^{th}$ it was filtered .

All the 20 patients have given the kwatha in the dose of 20 ml twice daily after meal for two months.

After the trial 25% patients got excellent result,

55% patients got good result &

20% patients got poor result.

Vikriti Vigyan – 21

कामला रोग में रक्तवैकारिकी एवं रक्तमित्रार्क का उपशयात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
निर्देशक	:	प्रो. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. पीयूष मेहता
वर्ष	:	1999

प्रस्तुत शोध महानिबन्ध का उद्देश्य आयुर्वेदीय पद्धति से रक्त विकृति का निर्धारण एवं कामला में रक्तमित्रार्क के उपशयात्मक प्रभाव का अध्ययन करना रहा है।

इस अध्ययन हेतु कुल 30 आतुर लिए गए, जिन्हें वर्ग 'अ'' व वर्ग 'ब'' में विभक्त कर 15–15 आतुर कामला के भेदानुसार शाखाश्रित व कोष्ठशाखाश्रित के लिए गए । उपशयात्मक औषध के रूप में रक्तमित्रार्क (सिद्धभेषजमणिमाला चतुर्थ गुच्छ (14)) 25 मि.लि. प्रातः सायं दिया गया । औषध प्रयोग अवधि एक माह रखी गई ।

वैकृत रक्त के चार लक्षण शास्त्रानुसार वर्गीकृत किए गए हैं – वर्णक्षय, बलहानि, अग्निमान्द्य एवं उत्साह हानि । औषध सेवन के पश्चात् सम्पूर्ण आतुरों के वर्णक्षय लक्षण में 42.56 प्रतिशत लाभ, बलक्षय लक्षण में 41.10 प्रतिशत लाभ, उत्साह हानि में 40.74 प्रतिशत लाभ एवं अग्निमान्द्य में 51.42 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ । इस प्रकार रक्तवैकृति निवारण में इस औषध का महत्वपूर्ण उपशयात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ।

वर्ग ''अ'' शाखाश्रित कामला में औषध सेवन से 20 प्रतिशत आतुरों में उत्तम लाभ, 73.33 प्रतिशत आतुरों को मध्यम लाभ तथा 6.66 प्रतिशत को अल्पलाभ हुआ । वर्ग 'ब'' कोष्ठशाखाश्रित कामला में उपशयोपरान्त 26.66 प्रतिशत आतुरों में उत्तम लाभ, 60 प्रतिशत आतुरों में मध्यम लाभ, 6.5 प्रतिशत आतुरों में अल्प लाभ तथा 7 प्रतिशत आतुरों में लाभ नहीं हुआ।

Vikriti Vigyan – 22

Clinical study of Sthaulya (Obesity) with special reference to Bilvadipanchamula

Scholar	:	Dr. Rubi Rani Agrawal
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Piyush Mehta
Year	:	1999

The objects of this study were –

1. To know the aetiopathology of sthaulya.
2. To evaluate the efficacy of Bilvadipanchamula with honey.
3. The biochemical estimation of blood which will find out the effect of Bilvadipanchamula.

This study was done of twenty patients. They were catagorised in three grade on the basis of symptoms.

Grade Ist : less than ten symptoms are present.

Grade IInd : 10 to 15 symptoms are present.

Grade IIIrd : more than 15 symptoms are present.

Bilvadipanchamula (Cha.Chi. 21/24) drug was used in kwath form in 25 ml with honey twice a day for two months.

It was found that 33.3% cases were suffering from mild obesity. After receiving treatment 8.33% cases were relieved while 25% remain unchanged. 25% cases were belonging to moderate group, cases of this group converted to mild category while other 16.66% remain in the same group with little change.

In severe catagory out of 41.6% cases there were 33.32% cases converted to moderate degree after getting treatment while 8.33% remain unchanged.

Vikriti Vigyan – 23

Aetiopathological study of Hypertenstion with associated Mental illness & management with Prasadini Vati & Mansyadi Kwatha

Scholar	:	Dr. Prakash Chandra Padhee
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Shri Krishna Khandel
Year	:	1999

The aims of this study were –

1. To draw the result of those aetiopathological factors in pathogenesis of disease in a scientific way.
2. In which condition, Prasadini Vati with Manasyadi Kwatha acts as best that was being evaluated.
3. To explain the inter relationship between biochemical changes of blood with diet & generalised symptoms was studied.

32 patients were registered and only 20 patients completed the course.

These 20 patients were divided into 2 groups. 10 patients were in drug trial group along with asana, pranayama and dietetic restriction and in the second group 10 patients were in placebo group accompanying the same regimens as that of trial group.

Drug & dose -

i) Prasadini Vati (Contents : Shankhpuspi 4 part & Sarpagandha 1 part) - 500 mg b.d. for 28 days.

ii) Mansyadi Kwatha (Siddha Yoga Sangraha, Vata Rogadhikar) - 20ml b.d. for 28 days.

Results of the trial group shown as : cure in 30%, mild improvement in 40%, markedly improvement, improvement, and moderately improvement in each 10% of the patients.

Results of the placebo group shown as : cure in 20%, markedly improvement and moderately improvement in each 10%, mild improvement and unchanged in each 30% of the patients.

विकृति विज्ञान – 24

कामला रोग का निदान सम्प्राप्ति परक विवेचन एवं दुग्धफेनी का उपशयात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. पंकज मरोलिया
निर्देशक	:	प्रो. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. पवन कुमार गोदतवार
वर्ष	:	2000

आयुर्वेद शास्त्र में कामला का वर्णन प्रायः पाण्डु के साथ ही मिलता है। यद्यपि आचार्य वाग्भट ने कामला का पाण्डु के अलावा स्वतन्त्र होने का भी संकेत दिया है। रक्तवह स्रोतस् की एक प्रमुख व्याधि कामला है।

प्रस्तुत शोध महानिबन्ध के उद्देश्य हैं –

- कामला के निदान व सम्प्राप्ति का सूक्ष्म अध्ययन व आधुनिक अनुसंधानित विषय का अध्ययन।
- कामला रोग में दोष, दूष्य व मलों की विकृति के परिप्रेक्ष्य में वैकृतिक परिवर्तनों के सम्बन्ध में विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- कामला रोग की विभिन्न अवस्थाओं में दुग्धफेनी औषध का प्रभाव ज्ञात करना।

21 कामला रोगियों का अष्टविध तथा त्रिविध परीक्षा द्वारा निर्धारण कर चयन किया गया।

औषध के रूप में दुग्धफेनी मूल चूर्ण 500 मि.ग्रा. दुग्धफेनी पंचांग क्वाथ 20 मि.लि. के साथ दिन में 2 बार 21 दिन तक प्रयोग करवाया गया ।

कोष्ठाश्रित कामला में उपशय के पश्चात् –

उत्तम लाभ – 9.49 प्रतिशत, मध्यम लाभ – 85.71 प्रतिशत, अल्पलाभ – 47 प्रतिशत पाया गया ।

कोष्ठाश्रित कामला के लक्षणों में –

उत्तम लाभ – 25 प्रतिशत, मध्यम लाभ 66.66 प्रतिशत, अल्प लाभ 8.33 प्रतिशत पाया गया ।

शाखाश्रित कामला में उपशय के पश्चात् –

उत्तम लाभ – 0 प्रतिशत, मध्यम लाभ – 100 प्रतिशत, अल्प लाभ 0 प्रतिशत पाया गया ।

शाखाश्रित कामला के लक्षणों में –

उत्तम लाभ 18.18 प्रतिशत, मध्यम लाभ 72.72 प्रतिशत, अल्प लाभ 09.10 प्रतिशत पाया गया ।

विकृति विज्ञान – 25

शुक्रस्य दोषात् क्लैब्यमहर्षणम् के परिप्रेक्ष्य में शुक्र का विश्लेषणात्मक परीक्षण एवं लाजवन्ती, उटंगण तथा वास्तुक बीज के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. गोविन्द प्रसाद गुप्ता
निर्देशक	:	प्रो. लोकनाथ शर्मा
वर्ष	:	2000

शुक्र शरीर की उत्तम एवं अंतिम धातु मानी गई है। शुक्र का मुख्य कर्म गर्भोत्पादन कर उत्तम संतान उत्पन्न करना है। यह तभी संभव है जब शुक्र अपने गुणों के साथ प्रशस्तावस्था में शरीर में विद्यमान हो एवं प्रशस्त आर्तव से उचित काल में संयोग करे। जीवन की 3 एषणाओं में एक ''पुत्रैषणा'' पुत्र के अधीन मानी है। शुक्रदुष्टि के हेतुओं का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि यह व्याधि मानसिक कारणों से अधिक होती है। इसके साथ असात्म्य आहार–विहार भी शुक्रदुष्टि में सहायक होते हैं। अतः उपशयात्मक अध्ययन के लिए महानिबन्ध के विषय का चयन किया गया है।

इस अध्ययन हेतु कुल 30 रोगियों का चयन किया गया।

रोगी आयु सीमा 20–50 वर्ष रही।

सभी रोगी विवाहित थे।

औषध रूप में लाजवन्ती, उटंगण, वास्तुक बीज के चूर्ण को 3–3 ग्राम सुबह–शाम 250 मि.लि. दुग्ध से 45 दिन तक प्रयोग करवाया गया।

परिणामस्वरूप सभी रोगियों में ध्वजोत्थानाभाव में औसत लाभ 93.56 प्रतिशत रहा जो उत्तम लाभ माना गया।

सभी रोगियों में शीघ्रस्खलन में औसत लाभ 93.33 प्रतिशत रहा जो उत्तम लाभ माना गया।

सभी रोगियों के मैथुन अनिच्छा में औसत लाभ 94.92 प्रतिशत रहा। यह भी उत्तम लाभ माना गया जो प्रमुख लक्षणों में सर्वाधिक था।

विकृति विज्ञान – 26

तमक श्वास का दोष दूष्य के परिप्रेक्ष्य में मानकीकरण एवं उसकी आत्ययिक अवस्था में सोमलता शर्करा का उपशयात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. जगदीश प्रसाद बैरवा
निर्देशक	:	प्रो. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. पीयूष मेहता एवं डा. पवन कुमार गोदतवार
वर्ष	:	2001

तमक श्वास में आत्ययिक स्थिति अत्यधिक कष्टकर होती है, अतः तमक श्वास की आत्ययिक अवस्था में सोमलता शर्करा का उपशयात्मक अध्ययन विषय का इस शोध महानिबन्ध के लिए चयन किया गया है।

इस अध्ययन हेतु 30 रोगियों का चयन किया गया।

सभी 30 रोगियों को सामान्य अवस्था में सोमलता शर्करा 20 मि.लि. का प्रयोग दिन में तीन बार सम भाग कोष्ण जल से एवं आत्ययिक अवस्था में 20 मि.लि. सोमलता शर्करा का प्रयोग बार–बार लाभ पर्यन्त किया गया।

औषध प्रयोग अवधि – 25 दिन रखी गई ।

परिणामस्वरूप सबसे अधिक 33 प्रतिशत लाभ वेदना और स्पर्शासह्यता में हुआ एवं सबसे कम लाभ श्वास गति में 17.18 प्रतिशत रहा।

12.5 प्रतिशत लक्षणों में अल्प लाभ हुआ, 81.25 प्रतिशत लक्षणों में मध्यम लाभ एवं 6.25 प्रतिशत लक्षणों में उत्तम लाभ हुआ।

16.67 प्रतिशत रोगियों में अल्प लाभ एवं 83.33 प्रतिशत रोगियों में मध्यम लाभ हुआ।

Vikriti Vigyan – 27

A Diagnostic study of Urticaria vis a vis Dushi Visha

Scholar	:	Dr. Raj Kumar K.C.
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Year	:	2001

The aims of this study were:

1. Revealing the aetiology of Urticaria in ayurvedic perspective.
2. To evaluate the efficacy of vishahara drug in the disease with respect to clinical change and laboratory investigation.
3. This study is also aimed at clinically assessing the outcome of treatment in comparison to modern management.

28 patients were selected for study and divided in two groups -

Group A – 16 patients were given 2-4 vati (250 mg per vati) of Patola Katurohini Ghanvati (Ashtang Hridaya Sutrasthan 15/15) twice a day with water for 41 days.

Group B – 12 patients were given allopathic treatment for 41 days.

It was found that -

(i) Highly significant increased time interval between consecutive episodes of wheals with P.K. Ghanwati.

(ii) Significant decrease in severity of disease with P.K. Ghanwati.

(iii) It was observed that allopathic management proved to provide more temporary relief than deteriating the severity of disease.

(iv) Highly significant decrease in serum IgE level with P.K. Ghanvati.

(v) Neither ayurvedic nor allopathic management provided significant results on TEC, DLC and on positive skin prick test result.

Vikriti Vigyan – 28

Study on Ayurvedic concept of Pathogenesis of Perimenopausal syndrome & evaluation of efficacy of Rasayan compound in management

Scholar	:	Dr. Sunita
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Sushila Sharma
Year	:	2001

The objects of this study were :

1. To study the aetiopathogenesis of Perimenopausal syndrome with ayurvedic perspectives.
2. To study the efficacy of Rasayan compound (Contents : Bala, Aswagandha, Chandrasura & Madhuyashti) and Soyabean powder on Perimenopausal syndrome and vaginal cytology.

   54 women suffering from the syndrome were taken and divided in 3 groups for trial.

Group A - Rasayan compound was given to 20 patients in 2 gm dose three times a day with milk for 3 months.

Group B - Rasayan compound & Soyabean powder were given to 20 patients. Rasayan compound was given in 2gm dose three times a day with milk & 15 gm of Soyabean powder given two times a day with chapati for 3 months.

Group C - Glucose powder as a placebo was given to 14 patients.

After the trial -

Group A - 70% relief in variety of symptoms related to the syndrome was observed.

Group B - The result was statistically similar with group-A.

Group C - Statistically significant results were obtained in stress.

Addition of Soybean along with this drug has Synergistic effect.

It was observed that psychotherapy & pathya sevan are also very important in management of Perimenopausal syndrome.

Vikriti Vigyan – 29

The Aetiopathological study of Madhumeha and the Therapeutic effect of Nisha Triphala Yog

Scholar	:	Dr. Ish Sharma
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Rani Ramrakhyani
Year	:	2002

The objects of this research were to study the nidan for Madhumeha in present scenario along with the complication. Also study the clinical effect of Nisha Triphala Yog described in Yog Ratnakar, Prameha Chikitsa.

In this study, 2 groups of patients were formed.

Group A - 30 patients – Nisha Triphala Yog 16gm b.d. with water for 45 days.

Group B - 30 patients - Placebo Bilva Twak Churna – 16 gm b.d. with water for 45 days.

Nisha Triphala Yog showed 41.7% improvement in prabhoot mutrata, 10% in avil mutrata, 22.7% in swedatipravriti, 50.6% in daurbalya, 49% in vibandha, 31% in hastpadtal daha, 46.6% in kanthtalushosh, 42.8% in saad, 45.5% of pipasadhikya.

Among group A patients had less improvement in mutra madhurya, avil mutrata, kshudhadhikya, aalasya, kandu, napunsakata etc.

Among the patients of group B most patients had maximum deterioration in the following symptoms - prabhoot mutrata, swedati pravriti, daurbalya, kshudhadhikya, aalasya, atinidra, kanthtalu shosh, hastpadtal daha, malavrittajivha, saad & pipassadhikya.

Vikriti Vigyan – 30

Epidemiological (Case-control) study of Hridroga & Upashayatamaka effect of Haritakyadi Ghanvati

Scholar	:	Dr. Shrikant K.
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Piyush Mehta
		Dr. P.K. Godatwar
Year	:	2002

The objects of this study were:

1. To assess the incidence of Hridroga lakshanas, presence of nidan explained in ayurveda in the diagnosed case of cardiovascular disease and to establish a relationship with those available in present time.
2. To asses the efficacy of an ayurvedic formulation Haritakyadi Ghanvati in Hridroga.

The study was undertaken in 2 stages - epidemiological study and upasayatmaka study. The epidemiological study was conducted on the lines of case-control study.

For upasayatmaka study (clinical trial) 26 patients were taken those fulfilling the inclusion criteria.

Name of formulation - Haritakyadi Ghanvati.

(Contents - Haritaki, Pippali, Vacha, Shati, Rasna, Pushkarmula & Nagar).

Dose - 3gm/day in 3 divided doses with warm water.

Duration - 45 days.

It was found that -

- In all 14 pts. of urahshula complaint, there was 43.75% change in this symptom after the trial. P value is $p < 0.001$.
- 9 patients with hriddrava. P valve is $p < 0.001$.
- In 12 patients with complaint of akasmat bhaya – 82.35% of change was noted after the trail. Statistically highly significant.
- In 13 patients of shwasavarodha 56.25% change was noted after the trial. Statistically highly significant.
- Statistically highly significant results were noted even in the shrama, klama and shoka.
- Serum cholesterol ($p < 0.01$) statistically significant.

Vikriti Vigyan – 31

Etiopathological study of Hyperlipidaemia with special reference to Sthaulya a clinical study (with Vyoshadi Guggulu)

Scholar	:	Dr. Bhaskar Rao D.
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Piyush Mehta
Year	:	2002

The increased mortality rate in obese person is due to its complication. The common complications are related with cardiovascular, respiratory and metabolic functions. Now a days it has become a common problem due to changed environment and unhealthy livelihood. This aims of the study were :-

1. To know the etiopathology of Hyperlipidaemia i.e. sthaulya.
2. To evaluate the efficacy of prescribed drug, Vyoshadi Guggnlu (Bharat Bhaishajya Ratnakar, Part IV, P.N. 620) on sthaulya.
3. The biochemical estimation of blood which will find out the effect of Vyoshadi Guggulu in the pathogenesis of sthaulya.

27 patients were taken for trial & divided in two groups.

Ist group (19 patients) – clinical trial with Vyoshadi Guggulu 2 tab. t.d.s. with warm water for 90 days.

IInd group (8 patients) control study with only diet control for 45 days.

In group Ist – 36.84% cases were suffering from mild obesity-

6% cases were relieved

30% cases were unchanged.

42.10% cases were belonging to moderate obesity -

10% unchanged and remaining were relieved.

21.05% cases were of severe obesity – out of these 10% cases were changed in moderate obesity.

In group IInd :- 62.5% cases were of mild obesity - after control study no case was relieved.

25% cases were belonging to moderate obesity only 1 case changed into mild obesity, remaining were same.

12.5% cases were belonging to severe obesity, no case changed into moderate.

So, improvement in group Ist was highly significant. In case of group IInd it was not significant.

विकृति विज्ञान – 32

आमवात का निदान सम्प्राप्ति परक अध्ययन एवं विश्वभैषज्यादि योग का उपशयात्मक प्रयोग

अध्येता	:	डा. आदित्यनाथ तिवारी
निर्देशक	:	प्रो. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. पीयूष मेहता
वर्ष	:	2003

आमवात की तीव्रता वर्तमान युग में बढ़ते भौतिकवाद के कारण अत्यधिक हुई है। आहार एवं विहार के अष्ट आहार विधि विशेषायतन के अतिक्रमण के परिणामस्वरूप इस व्याधि के उत्पादक आम एवं वात की विकृति से इस व्याधि की

सम्प्राप्ति का निर्माण होता है। वर्तमान में इस व्याधि के नैदानिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन एवं औषध प्रभाव के अध्ययनार्थ अध्येता ने इस विषय का चयन किया है।

अध्ययन हेतु 30 रोगी लिए गए, जिन्हें समूह ''अ'' तथा समूह 'ब'' के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया। समूह ''अ'' के 15 आतुरों को विश्वभैषज्यादि योग (घटक द्रव्य–सुरंजान, शुण्ठी, गुडूची, अश्वगंधा व कालीमिर्च) 1–1 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार उष्ण जल के साथ एक माह तक दिया गया। वर्ग ''ब'' के 15 आतुरों को प्लेसिबो के रूप में शर्करा युक्त कैप्सूल दिए गए।

वर्ग ''अ'' के 15 आतुरों में आमवात के लक्षणों यथा–संधिशोथ में 64 प्रतिशत लाभ, प्रातःकालीन स्तब्धता में 55 प्रतिशत लाभ तथा अंगमर्द में 69 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ। वर्ग ''ब'' में आमवात के लक्षणों में लाभ का प्रतिशत अल्प रहा।

Vikriti Vigyan – 33

A Diagnostic study of Mutrakricchra

Scholar	:	Dr. Shrikant M.R.
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. P.K. Godatwar
Year	:	2003

The objects of this study were -

1. To establish a diagnostic criteria for Mutrakricchra based on urine microscopy and urine culture.
2. To study the effect of Trunapanchamula kwath in the treatment of Mutrakricchra.

30 patients were included in the study and divided in two groups A & B.

Inclusion criteria – Patients presenting with symptoms of Mutrakricchra with a positive urine culture.

Exclusion criteria – 1. Patients of upper urinary tract infection
2. Pregnant women.

Group A – 15 patients, where Trunapanchamula kwath 30ml thrice a day was administered.

Group B – 15 patients, where colourful water as a placebo in a dose of 4 tsf thrice a day was administered.

Duration of trial – 14 days.

On completion of trial the results achieved were :

In group A – Relief in pain 70%, in burning micturation 65%, in tenderness 69% and in hotness of urine 65%.

In group B - No significant result.

Vikriti Vigyan – 34

''.....शुक्रस्य दोषात् क्लैब्यमहर्षणम्।।'' A Nidanatmak study of Sukradosa with special reference to Klaibya

Scholar	:	Dr. M.R. Ajaya
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. P.K. Godatwar
Year	:	2003

Aims of this study were –

1) To assess the nidanas of Klaibya explained in ayurvedic text.
2) Establish a relationship between classical nidan with those found in present time.
3) To document the changes in Retas parameters in Klaibya.
4) To assess the efficacy of the following formulation in Klaibya.
   a) Akarakarabhadi Yoga (Sharangdhara Samhita-Madhyamkhand 6/132-134)
   b) Musali-Ashvagandha Yoga (Contents : Ashvagandha and Sweta Musali in equal quantity).

30 patients fulfilling the criteria of Klaibya as explained in ayurvedic classic were selected for study and divided in two groups.

Group I – 15 patients - Akarakarabhadi Yoga – 2 cap. (500 mg per cap.) in a day for 30 days.

Group II – 15 patients - Musali - Ashvagandha Yoga – 2 cap. (500 mg per cap.) twice daily for 30 days.

The Hb% of group I was improved by 2.65% after treatment which was insignificant statistically, while in group II the improvement was 11.01%.

In group I there was an improvement of 18.64%, 9.43%, 54.55% in semen volume, liquification time & viscosity respecting.

In group II with same parameters, there was an improvement of 52.63%, 26.42%, 57.14.

In sperm count group I shared 18.18% improvement but in group II improvement was 59.22%. Improvement found in active motility (RLP+SLP) in group I, 23.53% and in group II, 30.30%.

So in group II there was better improvement.

Vikriti Vigyan – 35

Aetiopathological study of Tamak Swasa & Upasayatmaka effect of Trikatu Vati & Dhumra Yoga

Scholar	:	Dr. Nikhila Ranjan Nayak
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Co-Guide	:	Dr. Piyush Mehta
Year	:	2003

Aims of this study were -

1. To establish relationship between classical nidan & those available in present time.
2. Know the upashayatmaka effect of Trikatu Vati and Dhumra Yoga in management of Tamakswasa.

30 patients were selected for the study and divided in 2 groups.

Contents : Sunthi, Pippali, Marich, Tankan - bhavna Nagapatra.

Group A – Trikatu Vati (Vaid Chintamani - contents : Sunthi, Pippali, Marich, Tankan-bhavna Nagapatra) 1 gm t.d.s. with Nagapatra swaras + Dhumra Yoga (Sushruta Samhita, Uttartantra 51/50) b.d. for 30 days.

Group B – Trikatu Vati 1 gm t.d.s. with Nagapatra swaras for 30 days.

Overall 55% clinical improvement was found in group A and 35% in group B. So, combined therapy of Trikatu Vati & Dhumra Yoga gives better relief than only Trikatu Vati.

Vikriti Vigyan – 36

Nidanatmaka study of Karnini Yonivyapad with special reference to Chronic Cervicitis with erosion

Scholar	:	Dr. Bharti Dadlani
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Year	:	2003

In ayurveda almost all the gynecological disorders come under yoni-vyapad. Among these Karnini Yonivyapad is one of the most prevalent disease & this study aims to develop the concept of aetiopathogenesis of Karnini Yonivyapad w s r to Chronic Cervitis with erosion and to compare the efficacy of Panchavalkal douche with Sphatika and Kasisadi taila pichudharana.

Total 36 patients were selected and diagnosed by speculum examination.

Exclusions – cervial carcinoma, pregnant woman, adolescent girl.

Selected patients were divided into 3 groups for study -

Group A – Panchvalkal kwath (Contents : Nyagrodha, Udumbara, Asvattha, Sirisa & Plaksa) prepared with 200 gm kwath churna and mixed with Sphatika (8gm) in the form of vaginal douche administration in 10 patients.

Group B – 16 patients administered pichu containing Kasisadi taila (Bhaisajaya Ratanavali, Arsorogachikitsa/204-206) 10 ml twice a day.

Group C – 10 patients administered pichu & vaginal douche both.

In all the 3 groups treatment started from 6th day of menstrual cycle & was carried out for 45 days. If erosion persists even after treatment, then treatment was given again after next menstrual cycle.

Overall relief in symptoms of group A was 52.72%, 67.43% in group B & 75% in group C.

विकृति विज्ञान – 37

आमवात का निदान, सम्प्राप्ति एवं उपशयात्मक खण्डशुण्ठ्यवलेह व भल्लातकादि चूर्ण का प्रयोगात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. मुरारीलाल मीना
निर्देशक	:	प्रो. लोकनाथ शर्मा
सह–निर्देशक	:	डा. पवन कुमार गोदतवार
वर्ष	:	2003

प्रस्तुत महानिबन्ध के उद्देश्य हैं –

(1) आमवात के आयुर्वेद शास्त्रानुसार एवं आधुनिक चिकित्सा विज्ञानानुसार वर्णित निदानों का समन्वय तथा वर्तमान परिवेश में प्राप्त अन्य निदानों का अध्ययन।

(2) देह प्रकृति के आधार पर आमवात का विवेचन।

(3) आमवात का सम्प्राप्ति विघटनात्मक अध्ययन।

(4) आमवात पर औषध योग खण्डशुण्ठ्यवलेह (योगरत्नाकर, आमवातचिकित्सा) एवं भल्लातकादि चूर्ण (योगरत्नाकर, आमवातचिकित्सा) का उपशयात्मक अध्ययन।

अध्ययनार्थ 30 आतुरों को वर्ग अ, ब, स में वर्गीकृत किया गया ।

वर्ग ''अ'' के 10 आतुरों को खण्डशुण्ठ्यवलेह 20–20 ग्राम दिन में दो बार, पंचकोल सिद्ध जल के अनुपान से दिया गया ।

वर्ग ''ब'' के 10 आतुरों को भल्लातकादि चूर्ण 3–3 ग्राम दिन में दो बार जल से दिया गया।

वर्ग ''स'' के 10 आतुरों को खण्डशुण्ठ्यवलेह व भल्लातकादि चूर्ण दोनों का प्रयोग करवाया गया।

प्रयोग अवधि 60 दिन रखी गई।

आमवात के प्रमुख लक्षण प्रातःकालीन जाड्यता में वर्ग ''अ'' में चिकित्सा पश्चात् 40.4 प्रतिशत लाभ, वर्ग ''ब'' में 56 प्रतिशत लाभ तथा वर्ग ''स'' में 71.43 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ।

संधिशूलगत लक्षण में वर्ग ''अ'' में 35.7 प्रतिशत लाभ, वर्ग ''ब'' में 66.67 प्रतिशत लाभ तथा वर्ग ''स'' में 82.61 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ।

इस प्रकार वर्ग ''स'' में आमवात के लक्षणों में सबसे अधिक लाभ हुआ।

Vikriti Vigyan – 38

Aetiological and Therapeutic study on Shleshmaja Yonivyapada with special reference to Infective Vaginitis

Scholar	:	Dr. Shipra Agrawal
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Year	:	2004

Aims of this study were –

- To study Infective Vaginitis in ayurvedic perspective.
- To develop an ayurvedic aetiopathogensis of Infective Vaginitis in terms of Shleshmaja Yonivyapada.
- To study the therapeutic effect of Dhatkyadi taila (Cha.Chi. 30/78-81) & Dhatakyadi kwatha (same contents of Dhatkyadi taila except taila, aja mutra & aja dugdha) in treatment of Shleshmaja Yonivyapada w.s.r. to Infective Vaginitis.
- To study the antimicrobial sensitivity of the drug -

31 patients were selected for the trial and divided in two groups.

Group A - In 16 pts. given Dhatakyadi kwatha douche in the dose of 1½ litre followed by Dhatakyadi taila pichu dharana in the dose of 10ml for 15 days.

Group B - In 15 patients Clotrimoxazole vaginal tablet for first 6 days with Betadine vaginal tablet for 14 consecutive nights.

It was found that in group A – 35.22% overall relief.

In group B – 60.00% overall relief.

विकृति विज्ञान – 39

कामला रोग का निदान सम्प्राप्ति परक विवेचन एवं फलत्रिकादि घनवटी का उपशयात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. अवधेश कुमार
निर्देशक	:	प्रो. लोकनाथ शर्मा
वर्ष	:	2004

कामला रोग रक्तवह स्रोतस् की प्रमुख व्याधि है जिसके लक्षण Jaundice और Viral Hepatitis से मिलते हैं, पाण्डु रोगी जब अधिक मात्रा में पित्तल आहार–विहार का सेवन करता है तो वह कामला रोग से ग्रसित हो जाता है।

प्रस्तुत महानिबन्ध के उद्देश्य हैं –

(1) कामला सम्प्राप्ति की विभिन्न अवस्थाओं का विवेचन करना।

(2) कामला रोग की विभिन्न अवस्थाओं में फलत्रिकादि घनवटी का उपशयात्मक अध्ययन करना।

इस अध्ययन हेतु 30 रोगियों का चयन किया गया, उन्हें फलत्रिकादि घनवटी (चक्रदत्त 3/7) की 2–2 वटी (500 मि.ग्रा. प्रति वटी) दो या तीन बार तीस दिन तक प्रयोग कराई गई।

लक्षणों में औसत उपशमन निम्न प्रकार प्राप्त हुआ –

1.	हारिद्रत्वक्नखानन	70.93 प्रतिशत
2.	रक्तपीतशकृन्मूत्र	69.57 प्रतिशत
3.	अविपाक	68.83 प्रतिशत
4.	अरूचि	77.32 प्रतिशत
5.	दाह	66.67 प्रतिशत
6.	ज्वर	86.36 प्रतिशत
7.	दौर्बल्य	73.68 प्रतिशत
8.	छर्दि	88.89 प्रतिशत
9.	तृष्णा	66.67 प्रतिशत
10.	विबंध	56.82 प्रतिशत
11.	आटोप	64.71 प्रतिशत
12.	उदरशूल	63.64 प्रतिशत
13.	शोथ	80 प्रतिशत
14.	श्वेतवर्च	66.67 प्रतिशत
15.	कण्डू	83.33 प्रतिशत
16.	श्वास	60.87 प्रतिशत
17.	भ्रम	72.73 प्रतिशत
18.	हृद्गौरव	68 प्रतिशत
19.	अंगमर्द	71.43 प्रतिशत
20.	पाण्डु	75.86 प्रतिशत
21.	यकृतवृद्धि	68.18 प्रतिशत
22.	प्लीहावृद्धि	69.70 प्रतिशत

इस प्रकार फलत्रिकादि घनवटी के उपयोग से कामला के विभिन्न लक्षणों में लाभ मिला तथा प्रयोगशालीय परीक्षणों में भी सुधार देखा गया।

विकृति विज्ञान – 40

तमक श्वास का निदान सम्प्राप्ति परक विवेचन एवं श्रृंग्यादि चूर्ण तथा देवदार्वादि धूम का उपशयात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. विश्राम प्रसाद अग्रहरि
निर्देशक	:	डा. पीयूष मेहता
वर्ष	:	2004

प्रस्तुत महानिबन्ध के उद्देश्य हैं –

(1) तमक श्वास का नैदानिक अध्ययन जिसमें निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय, सम्प्राप्ति एवं सापेक्ष निदान का अध्ययन करना जिससे तमक श्वास रोग का विनिश्चय सुगमता से किया जा सके।

(2) श्रृंग्यादि चूर्ण एवं देवदार्वादि धूम का उपशयात्मक अध्ययन।

(3) तमक श्वास का Bronchial Asthma के साथ तुलनात्मक अध्ययन।

इस अध्ययन हेतु 30 आतुरों का चयन कर दो वर्ग बनाए गए ।

वर्ग 'अ'' – श्रृंग्यादि चूर्ण (चक्रदत्त 12/9) 3–3 ग्राम मात्रा में दिन में 3 या 4 बार उष्ण जल से ।

वर्ग 'ब'' – पूर्वोक्त मात्रा में श्रृंग्यादि चूर्ण का प्रयोग + देवदार्वादिधूम (भावप्रकाश, श्वासरोगाधिकार/33) का सुबह एवं शाम दो बार धूमपान कराया गया ।

प्रयोग अवधि 30 दिन रखी गई ।

समग्र लक्षण समुच्चय के आधार पर वर्ग ''अ'' के रोगियों में कुल लाभ 64.47 प्रतिशत तथा वर्ग ''ब'' के रोगियों में 67.47 प्रतिशत लाभ प्राप्त हुआ। अतः वर्ग ''ब'' को ज्यादा लाभ हुआ।

विकृति विज्ञान – 41

आमवात का निदान सम्प्राप्ति परक एवं अलम्बुषादि घनवटी का उपशयात्मक अध्ययन

अध्येता	:	डा. मनमोहन शर्मा
निर्देशक	:	प्रो. लोक नाथ शर्मा
वर्ष	:	2004

प्रस्तुत शोध महानिबन्ध का उद्देश्य आयुर्वेदीय ग्रंथों में वर्णित आमवात रोग के निदान, सम्प्राप्ति एवं लक्षणों आदि का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना एवं आमवात के घटक दोष, दूष्य, आम आदि का विश्लेषण कर, अलम्बुषादि घनवटी का आमवात रोगी पर उपशयात्मक प्रभाव का अध्ययन करना है।

उपशयात्मक अध्ययन हेतु रोगियों को दो वर्गों यथा – RA Factor धनात्मक तथा RA Factor ऋणात्मक के भेद से विभाजित किया गया। दोनों वर्गों में 15–15 रोगियों को लिया गया। औषध के रूप में अलम्बुषादि चूर्ण (योगरत्नाकर, आमवातचिकित्सा) के द्रव्यों के घनसत्व की 500 मि.ग्रा. की 2 गोली दिन में 3 बार उष्ण जल से 45 दिनों तक प्रयोग कराई गई ।

इस औषध के उपशयात्मक प्रयोग से अन्नवह स्रोतस् संबंधी विकारों यथा– अरूचि, अपाक, मंदाग्नि आदि पर अतिसार्थक परिणाम प्राप्त हुआ। संधिशूल, संधिशोथ एवं प्रातःकालीन स्तब्धता पर इसका सार्थक परिणाम प्राप्त हुआ। इस शोधकार्य में RA Factor धनात्मक वर्ग के रोगियों में आमवात रोग की उग्रता किंचित अधिक पाई गई जिसकी तुलना इसकी प्रवृद्धावस्था से की जा सकती है।

लक्षण समुच्चय पर इस औषध के प्रभाव का परिणाम –

वर्ग अ (RA Factor धनात्मक रोगियों में) में – 58.02 प्रतिशत

तथा वर्ग ब (RA Factor ऋणात्मक रोगियों में) में – 64.43 प्रतिशत

प्राप्त हुआ।

Vikriti Vigyan – 42

An Aetiopathological and Therapeutic study on Sthula Pramehi w.s.r. to NIDDM

Scholar	:	Dr. Vivek Agrawal
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Year	:	2004

In this study scholar has described about Sthula Pramehi with special reference to Non Insulin Dependent Diabetes Mellitus and discovered the cause of the disease and therapeutic study on the Sthula Pramehi.

30 patient of Sthula Pramehi NIDDM category were taken between 35 to 65 years and divided into 3 groups for trial.

Group A : (10 patients) Given Glynase MF (Allopathic).

Group B : (10 patients) Where given Glynase MF with Mehari Yoga (Contents : Aamrasthi mejja, Jambu seeds, Karvellak fruit pulp, Nimba nimboli, Bilwa fruit pulp, Devdaru heart wood, Daruharidra heart wood, Palandu seeds, Amalki fruit pulp - all in equal parts) 5gm b.d. with water for one month (combined).

Group C : (10 patients) Where given Mehari Yoga.

From the research work it was derived that this disease is very common in upper middle class, because of their sedentary and comfortable life style. Mehari Yoga was very effective in reducing physical examination parameters (weight, BMI, hip circumference and blood sugar level).

The drug was well tolerated and free from side effects. Patients dependent on ayurvedic drug were of much improvement than of allopathic drug. No complication were observed in any group.

Vikriti Vigyan – 43

Etiopathological study of Hyperlipidaemia (Medodusti) with special reference to Diabetes Mellitus and Therapeutic trial of Ayurvedic formulation (Lipidocare compound)

Scholar	:	Dr. Keshav Pd. Gupta
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Year	:	2005

Aims of this study were -

(1) To assess the presence of various etiological factors which cause Hyperlipidaemia in diagnosed case of type 2 Diabetes Mellitus.

(2) To establish the relationship of Medodusti in ayurvedic literature with respect to modern medicine.

(3) To assess the efficacy of drug Lipidocare compound (Hypothetical) in the management of Hyperlipidaemia in Diabetes Mellitus.

36 Patients of Hyperlipidaemic obese diabetics were selected for trial and randomly divided into 3 groups.

Group A - 12 patients - Placebo with dietary restriction, trace amount of Chilli seed powder mixed with Yava powder in the dose of 4gm. b.d. with luke warm water before 15 minutes of meal for 3 months.

Group B - 12 patients - Lipidocare compound (Contents : Daruharidra, Rason, Sunthi, Pippali, Guggulu etc.) with dietary restriction in the dose of 4gm. b.d. with luke warm water before 15 minutes of meal for 3 months.

Group C - 12 patients - Lipidocare compound in the dose of 4gm. b.d. with luke warm water before 15 minutes of meal for 3 months with dietary restriction and exercise.

Overall study show symptomatic improvement in group A was 20.47%, in group B was 46.25%, while in group C was 50.49%.

Overall percentage of improvement of physical parameters in group A was 1.55%, In group B was 5.79%, while in group C was 6.97%. Hb% improvement show statistically insignificant result in group A & group B, but in group C it was 3.95% ($p<.001$) i.e. highly significant. Mean lipid profile reduction was 6.29%.($p<0.10$) in group A and it shows the insignificant results. In group B was 19.89% ($p<0.001$) and in group C was 22.48% ($p<0.001$), it shows the highly significant results.

Lipidocare compound when used separately or with prescribed diet and exercise is good remedy for the management of Hyperlipidaemia (Medodusti) in DM.

Vikriti Vigyan – 44

Nidanatmak and Upshyatmaka study of Tridoshaja Yonivyapada w.s.r. to Bacterial Vaginosis

Scholar	:	Dr. Rizwana Parveen
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Year	:	2005

Women's health is of prime importance to get a healthy society. Bacterial Vaginosis is the most common vaginal infection among the females of child bearing age. It may be the cause of up to one half of cases of Vaginitis. The present study was aimed to assess aetiopathogenesis and to test and compare the efficacy of Veg. cure kwath (Kalpit yoga) with sphatika douche and Veg. cure oil pichu dharana.

The clinical study was done on 40 patients of Tridoshaja Yonivyapada on the basis of symptomatology and laboratory investigation. The pts. were divided into two groups A and B.

Group A – 20 patients of Tridoshaja Yonivyapada were given Veg. cure kwath douche followed by Veg. cure oil picchu dharana for 15 days.

Group B – 20 patients of Tridoshaja Yonivyapada were given allopathic treatment as control group.

Ingredients of Veg. cure kwath and Veg. cure oil – Haritaki, Vibhitaka, Amalki (fruit pulp), Dhataki (flower), Lodhra (bark), Madhuka roots, Vata twak, Nimb twak & leaves, Pattrang (wood), Sphatika, Gandhak, Gomutra, Til Tail.

Attempts were made to elicit the subjective improvement produced by the drug under trial. There was marked improvement in the feeling of well being physical and mental fitness.

Group A showed 73.47% result in yoni-srava, 55% relief in yoni-kandu, 60% relief in yoni daurgandhya, 61.11% relief in yoni-daha, 57.14% relief in yoni-shotha.

Group B showed 77.08% relief in yoni-srava, 76.47% relief in yoni-kandu, 69.23% relief in yoni-daurgandhya, 68.42% relief in yoni-daha and 66.67% relief in yoni-shotha.

Both the groups showed insignificant result on haemoglobin, significant result in TLC and highly significant decrease in ESR levels.

Vikriti Vigyan – 45

Nidanatmak study of Klaibya (Impotence) and Upashayatmaka study of Vajikarn Yoga (Kalpit)

Scholar	:	Dr. Jitendra Kumar
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Year	:	2005

The objects of this study were –

1. Conceptual & clinical correlation of Klaibya described in classical texts with male sexual dysfunction.
2. To counsel the patients about sexual problems.
3. To cure their problem with the help of Vajikarn Yoga (Kalpit) containing - Aswagandha, Akarkara, Tulsi, Vidari, Kaunch Beej, Sweta Musali, Vrihat Gokshur & Talmakhana.

45 patients were selected for the study and divided into three groups, each having 15 patients.

Group A : This group was treated with Vajikarn Yoga in the dose of 5-10 gm b.d. with luke warm milk for 2 months.

Group B : This group was given placebo along with proper counselling.

Group C : Pts. of this group were offered Vajikarn Yoga in the same manner as group A with proper counselling.

It was found that –

63% improvement occurred in group A,

42% improvement occurred in group B and

71% improvement occurred in group C.

Hb. as well as Semen parameters showed marked improvement in group C as compared to group A & B.

Vikriti Vigyan – 46

An Aetiopathological study of Hypertension and a Therapeutic effect of Medhyog Ghana Vati

Scholar	:	Dr. Devendra Kumar Singh
Guide	:	Prof. Lok Nath Sharma
Year	:	2005

Aims of this study were -

1) To study the nidan.
2) To study the therapeutic effect of Medhyog Ghana Vati (Kalpit– Sankhapushpi, Gokshura, Jatamansi and Vacha) on Hypertension.

Selected 45 patients were divided in three groups for trial.

Group A – 15 patients were treated with Medhyog Ghana Vati two pills of 500 mg thrice a day for one month with plain water.

Group B – 15 patients were given Medhyog Ghana Vati with Atenolol 50 mg once a day for one month.

Group C – 15 patients were given Atenolol 50 mg as control group.

It was found that -

1) Medhyog Ghana Vati shows a significant reduction in SBP decreasing from 151.33 mm of Hg to 137.47 mm of Hg after one month treatment.
2) DBP fall from 95.33 mm of Hg to 87.40 mm of Hg.
3) Initial heart rate was 76.40 beats/minutes but after one month's treatment it was 73.33 beats/minutes.
4) Significant cholesterol reduction is found in A & B group, but there was not significant cholesterol reduction in C group.